1 कला संस्कृति

संस्कृति : अवधारणा एवं समझ

- संस्कृति शब्द सम् + कृ + ति से बना है, जिसका अर्थ है अच्छी तरह से निर्मित किया हुआ। अच्छे से संस्कारित किया हुआ। संस्कृति विचार, भावना, प्रथाओं, संस्कारों और ज्ञान का एक ऐसा समन्वित रूप है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरित होता है।
- संस्कृति संस्कारों से जुड़ी है, यह किसी भी क्षेत्र से संबंधित हो सकती है। अतः ''संस्कृति सीखा हुआ व्यवहार है'' यह प्रकृति से मनुष्य को मिला व्यवहार नहीं है। **लापीयर** के अनुसार ''संस्कृति पीढ़ियों से प्राप्त किसी सामाजिक समूह की शिक्षा है जो रीति–रिवाजों, परम्पराओं आदि में अभिव्यक्त होती है।''
- संस्कृति किसी भी देश और समाज की पहचान है। संस्कृति के आधार पर ही किसी राष्ट्र की गरिमा आंकी जा सकती है। इसमें जीवन–मूल्य, धर्म, दर्शन, कला, शिक्षा, साहित्य, आचार–विचार, आस्था – विश्वास आदि सभी कुछ सम्मिलित हैं।
- संस्कृति पर अब तक की गई चर्चा के अनुक्रम में संस्कृति की आधारभूत विशेषताएँ इस प्रकार हो सकती हैं :–
  - ✓ संस्कृति में समूह के आदर्शों नियमों एवं विचारों का समावेश होता है।
  - ✓ संस्कृति सम्पूर्ण सामाजिक विरासत है। इसमें एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को परम्पराओं एवं प्रथाओं का हस्तान्तरण होता रहता है।
  - ✓ संस्कृति मनुष्य की व्यक्तिगत विरासत नहीं अपितु सामाजिक विरासत होती है।
  - ✓ भाषा संस्कृति की वाहक है। भाषा से अतीत में सीखे गए व्यवहार का हस्तांतरण होता है।
  - ✓ संस्कृति प्राकृतिक नहीं होती। समाजीकरण, आदतों एवं विचारों द्वारा सीखे गए लक्षणों को संस्कृति कहा जाता है। संस्कृति सीखी जाती है।

संस्कृति एवं सभ्यता

- संस्कृति व सभ्यता के बारे में विचार करें तो हम पाते हैं कि संस्कृति और सभ्यता में अन्तर है।
- सभ्यता मनुष्य के भौतिक विकास के साथ–साथ परिवर्तित होती रहती है। मनुष्य की भौतिक प्रगति का लक्ष्य यह रहा कि वह जीवन की आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति सरलता और सुगमता से कर सकें मनुष्य जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति करता चला जा रहा है। इस प्रकार समस्त भौतिक विकास का समावेश सभ्यता के अन्तर्गत ही होता है।
- संस्कृति किसी वस्तु के लिए साधन नहीं, वह स्वयं साध्य है। संस्कृति से सभ्यता की तुलना करें तो सभ्यता साधन है, स्वयं साध्य नहीं है। रेडियो, टेलीविजन सभ्यता के सूचक हैं। ये सभी साधन हैं। ये हमारे विचारों को संसार तक पहुँचाने में उपयोगी हैं। रेडियो या टेलीविजन से जो विचार व्यक्त किए जाते हैं वे संस्कृति के सूचक हैं, आन्तरिक हैं, साध्य हैं। इनकी उपयोगिता अनुपयोगिता की जाँच नहीं होती अपितु इनका तो सांस्कृतिक पैमाने से मूल्य आँका जाता है।
- इस प्रकार सभ्यता अपेक्षाकृत शीघ्र परिवर्तित होती रहती है, जबकि संस्कृति आत्मोन्नति का प्रतिफल है। किसी भी देश की संस्कृति के प्रमुख अंग वहाँ का साहित्य, धार्मिक एवं कलात्मक सृजन का इतिहास होता है। इन तीनों क्षेत्रों का सम्मिलित रूप वहाँ की संस्कृति के निर्धारण का आधार बनता है।

कला एवं संस्कृति

- कला किसी भी विचार और कल्पना का मूर्तरूप है। कला में लोक संस्कृति समाहित होती हैं।
- लोक गीत, संगीत, त्यौहार, रहन–सहन, खान–पान मेले, अनुष्ठान, आचार–व्यवहार भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं।
- भारत विभिन्नताओं का देश है फिर भी सांस्कृतिक रूप के रूप में इसका अस्तित्व प्राचीनकाल से आज तक बना हुआ है। इसके विभिन्न राज्यों की अपनी–अपनी भौगोलिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विशेषताएँ हैं।

- छत्तीसगढ़ की अपनी विशेष संस्कृति है,यह एक आदिवासी बहुल राज्य है। यहाँ विभिन्न जनजातियाँ अपनी पूरी विशेषताओं के साथ विद्यमान हैं। यहाँ की प्रमुख जनजातियाँ गोंड, हल्बा, माडिया, मुड़िया, भतरा, बैगा, कमार, कोरवा आदि हैं। इन सभी की अपनी–अपनी सांस्कृतिक विशेषताएं हैं। छत्तीसगढ़ का जनजीवन संगीत व नृत्य प्रिय है।
- देवी देवताओं को प्रसाद चढ़ाने से लेकर तीज–त्यौहारों व विभिन्न अवसरों पर पकवान बनाने की परम्परा छत्तीसगढ़ में है। सामूहिक भोजन में लड्डू, बरा, सोहारी, छत्तीसगढ़ की संस्कृति में शामिल है। यह मिल–जुल कर रहने की परम्परा का प्रतिक है।
- भारत के हृदय स्थल पर स्थित छत्तीसगढ़ जो भगवान राम की कर्मभूमि रही है, प्राचीन कला, सभ्यता, संस्कृति, इतिहास और पुरातत्त्व की दृष्टि से अत्यंत संपन्न है।
- छत्तीसगढ़ व्यापक रूप से गाँवों, कस्बों का प्रदेश है। यहाँ की संस्कृति को लोकसंस्कृति के रूप में देखना ही अधिक सार्थक है। छत्तीसगढ़ की संस्कृति लोक की संस्कृति है जो जनजातीय भू–भागों में अपनी पृथक् सांस्कृतिक अस्मिता के साथ संरक्षित है। इसके आचार–विचार, रीति–रिवाज, उत्सव, मान्यताएँ, जीवनशैली, लोकगीत–संगीत, लोकगाथाएँ, लोकचित्रकला से समृद्ध हैं।
- छत्तीसगढ़ अनेक संस्कृतियों को पोषण दता रहा है। यहाँ के अधिकांश निवासी प्रकृति पर आस्था रखते हैं, परंतु तेजी से बदलते आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तनों के कारण छत्तीसगढ़ की लोकसंस्कृति भी प्रभावित हो रही है।

मूर्त विरासत

- सांस्कृतिक विरासत के दो प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है, मूर्त और अमूर्त। किसी देश की मूर्त या भौतिक सांस्कृतिक विरासत मे ऐसे मानवीय निर्माण शामिल हैं जिन्हें महान सांस्कृतिक मूल्य माना जाता है और जिन्हें उनके सांस्कृतिक महत्व के लिए संरक्षित किया जना चाहिए।
- एक पुरस्कार या इनाम मूर्त हो सकता है (उदाहरण के लिए, एक वित्तीय राशि) या अमूर्त (तालियाँ)। कंप्यूटर सिस्टम के कुछ हिस्सों को आमतौर पर हार्डवेयर (मूर्त) और सॉफ्टवेयर (अमूर्त) में वगीकृत किया जाता है। मुर्त (एक घंटेमें बिकने वाले उत्पादों की संख्या) या अमूर्त (श्रमिकों की प्रेरणा)।

अमूर्त विरासत

- अमूर्त संस्कृति किसी सामुदाय राष्ट्र आदि की वह निधि है जो सदियों उस समुदाय या राष्ट्र के अवचेतन को अभिभूत करते हुए निरंतर समृद्ध होती रहती है।
- अमूर्त सांस्कृतिक समय के साथ अपनी समकालीन पीढ़ियों की विशेषताओं को अपने में आत्मसात करते हुए मौजूदा पीढ़ी के लिये विरासत के रूप में उपलब्ध होती है।
- अमूर्त संस्कृति समाज की मानसिक चेतना का प्रतिबिंब है, जो कला, क्रिया या किसी अन्य रूप में अभिव्यक्त होती है।

हिन्दी	अंग्रेजी	छत्तीसगढ़ी
रविवार	Sunday	इतवार
सोमवार	Monday	सम्मार
मंगलवार	Tuesday	मंगलवार
बुधवार	Wednesday	बुधवार
बृहस्पतिवार	Thursday	गुरूवार
शुक्रवार	Friday	शुक्रवार
शनिवार	Saturday	शनिच्चर

हिन्दी	अंग्रेजी	छत्तीसगढ़ी
चैत्र	Chaitra	चइत
वैशाख	Vaisakha	बैशाख, बइसाख
ज्येष्ठ	Jyeshtha	जेठ
आषाढ़	Ashadha	असाढ़
श्रावण	Shrawana	सावन
भाद्रपद	Bhadrapad	भादों
अश्विन	Ashvin	कुवाँर / क्वाँर
कार्तिक	Kartik	कार्तिक
अगहन / मार्गशीर्ष	Agrahayana	अग्घन
पौष	Paush	पूस
माघ	Magha	माघ
फाल्गुन	Phalguna	फागुन